



जिला पुस्तकालय

पंच गौरव कार्यक्रम

जिला प्रशासन कर्गली



मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर ज़िले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच—गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक ज़िले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से ज़िलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर ज़िले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल ज़िलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिरक्षर्धी की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

ज़िले में पंच—गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।


(भजन लाल शर्मा)

विषय—सूची

क्र.सं	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
1	प्रस्तावना	1
2	करौली जिले के पंच गौरव	2
3	कार्यक्रम का उद्देश्य	3
4	कार्यक्रम क्रियान्वयन हेतु जिला स्तरीय समिति	4
5	जिला स्तरीय समिति के कार्य	5
6	एक जिला एक उपज—तिल	6—12
7	एक जिला एक उत्पाद—सेण्ड स्टोन के उत्पाद	13—14
8	एक जिला एक खेल— किकेट	15—20
9	एक जिला एक वनस्पति प्रजाति—बरगद	21—25
10	एक जिला एक पर्यटन स्थल—कैलादेवी मन्दिर	26—28

प्रस्तावना

राज्य के प्रत्येक जिले में उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए ‘पंच गौरव’ के रूप में करौली जिले में पंच गौरव के रूप में, एक जिला एक उत्पाद के अन्तर्गत “सेण्ड स्टोन के उत्पाद” एक जिला एक उपज के अन्तर्गत “तिल” एक जिला एक वनस्पति प्रजाति के लिये “बरगद” एक जिला एक खेल के लिये “क्रिकेट” एक जिला एक पर्यटन स्थल के अन्तर्गत “कैलादेवी मन्दिर” चिन्हित किये गये हैं।

करौली जिले के पंच गौरव



कैलादेवी

क्रिकेट



बरगद का पेड़

तिल का पौधा



सेण्ड स्टोन के उत्पाद

कार्यक्रम के उद्देश्य

- जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन
- स्थानीय शिल्प उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवत्ता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिलों से प्रवास को रोकना
- जिलों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
- प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।
- खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सृजित करना।
- ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैश्विक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।
- सभी जिलों में समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/असंतुलन को कम करना।

कार्यक्रम क्रियान्वयन हेतु जिला स्तरीय समिति

पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के जिला स्तर पर प्रभावी संचालन हेतु निम्नानुसार समिति का गठन किया गया है—

क्र.सं	अधिकारी	पद
1	जिला कलक्टर	अध्यक्ष
2	उप वन संरक्षक, भू—संरक्षण करौली	सदस्य
3	महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र करौली	सदस्य
4	संयुक्त निदेशक, कृषि एवं उद्यानिकी करौली	सदस्य
5	संयुक्त निदेशक, सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग करौली	सदस्य
6	जिला खेल अधिकारी करौली	सदस्य
7	उप निदेशक पर्यटन विभाग, सवाई माधोपुर।	सदस्य
8	जिला सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी करौली	सदस्य
9	वरिष्ठ लेखाधिकारी कलक्ट्रेट करौली	सदस्य
10	उपनिदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग करौली	सदस्य सचिव

जिला स्तरीय समिति के कार्य

- जिला स्तर पर चिन्हित पंच गौरव के संबंध में विवरणिका तैयार करना।
- पंच गौरव प्रोत्साहन के लिये विभागीय समन्वय से जिला स्तरीय कार्य योजना एवं जिले में उपलब्ध बजट राशि में से विभिन्न कार्यों पर व्यय के प्रस्तावों का अनुमोदन।
- कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु जिले की कार्यप्रगति का विश्लेषण एवं समीक्षा।
- पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रचार—प्रसार की कार्ययोजना तैयार करना।
- पंच गौरव जिला पुस्तिका तैयार करना।

पंच गौरव कार्यक्रम

एक जिला एक उपज – तिल

तिलहन वर्ग की फसलों में मनुष्य को सबसे पहले तिल की जानकारी हुई थी। तिलहन ही फसलों में तिल एक महत्वपूर्ण फसल है, इसलिये इसे तिलहन फसलों की रानी कहा जाता है तथा तिल के तेल को गरीबों का धी कहा जाता है। तिल के बीजों का प्रमुख उपयोग तेल तैयार करने तथा कुल उत्पादन का 20 प्रतिशत भाग बीज के रूप में खाने के काम आता है, इसके बीजों का प्रयोग रसोई घर में गुड़ एवं शक्कर के साथ मिलाकर तिलकुटा, गजक, रेवडी, वर्फी आदि बनाने में किया जाता है। **तिले के बीजों में 44–54 प्रतिशत तक तेल होता है।** तेल में “सीसेमोल” नामक पदार्थ की उपस्थिति के कारण इसे अधिक समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है तथा तेल में सुगंध आती है वो सीसेमोल नामक पदार्थ की वजह से आती है। तिल की खली पशुओं के लिये पोष्टिक आहार है इसे खाद के रूप में भी उपयोग किया जाता है। तिल के उत्पादों को आदिकाल से धार्मिक उपयोग में लिया जा रहा है।

तिल एक पुष्टीय पौधा है जिसका वैज्ञानिक नाम सिसेमम इण्डिकम है जो कि एक पैडालिएसी कुल का पौधा है, यह खरीफ सीजन की मुख्य फसल है लेकिन दक्षिणी राजस्थान में इसे जायद में भी उगाया जाता है। विश्व में तिल उत्पाद में भारत का प्रथम स्थान है। तिल में एन्टी ऑक्सीडेट, कॉपर, मैग्नीशियम, आयरन, कैल्शियम, फॉर्स्फोरस, जिंक, बिटामिन और रेशे पाये जाते हैं जो कि रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद करते हैं।

क्षेत्रफल – विश्व में भारत का तिल उत्पादन में प्रथम स्थान है तथा राजस्थान का भारत में तिल उत्पादन में प्रथम स्थान है। राज्य में कुल उत्पादन क्षेत्रफल 4.47 लाख हैक्टर एवं उत्पादन 1.49 लाख टन व उत्पादकता 333 किलोग्राम प्रति हैक्टर है। राज्य में मुख्यतः तिल की खेती चित्तौड़गढ़, सवाई माधोपुर, उदयपुर, जोधपुर, पाली, करौली, नागौर, जालौर, भीलवाड़ा, अजमेर, टोक, जयपुर व दौसा जिले में प्रमुख रूप से की जाती है।

तिल का उत्पत्ति स्थान अफीका है। भारत वर्ष में इसकी खेती सदियों से की जा रही है।

जलवायु –

तिल सामान्यतया उष्ण कटिबंधीय जलवायु की फसल है। अच्छी पैदावार के लिए लम्बा तथा गर्म मौसम उपयुक्त रहता है। इसकी खेती के लिए उपयुक्त तापमान 25–27 सेल्सियस होता है यदि तापमान 20 सेल्सियस से नीचे होता है तो अंकुरण अवरुद्ध हो जाता है। सामान्यतया यह फसल 500 से 600 मिमी वर्षा वाले क्षेत्रों में खरीफ की ऋतु में बोई जाती है तथा काफी हद तक सूखा सहन कर सकती है लेकिन अंकुरण के लिए पर्याप्त नहीं होना आवश्यक है। अधिक वर्षा वाले क्षेत्र तिल की खेती के लिए उपयुक्त नहीं होते हैं।

मृदा –

तिल की खेती विभिन्न प्रकार की मृदाओं में की जा सकती है परन्तु बलुई दोमट जिसमें जीवन की मात्रा पर्याप्त हो, सर्वोत्तम मानी जाती है। अत्यधिक बलुई, क्षारीय एवं अम्लीय मृदाएँ इसकी खेती के लिए उपयुक्त नहीं हैं। मृदाओं का पी.एच. 5–6 तक होने पर तिल की खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है। उचित जल निकास होने पर भारी मृदाओं में भी तिल की खेती कर सकते हैं, लेकिन पानी भरने वाले क्षेत्र इसके लिए उपयुक्त नहीं हैं।

खेत की तैयारी –

भारी एवं अधिक खरपतवारों वाली भूमि में गर्मी में एक गहरी जुलाई करनी चाहिए। मानसून की वर्षा प्रारम्भ होने पर 1–2 जुलाई करके खेत तैयार कर लेना चाहिए। इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि खेल में पर्याप्त नहीं रहे जिससे अंकुरण अच्छा हो सके। उपलब्ध होने पर तीन साल में एक बार 10–15 टन गोबर की खाद प्रति हैक्टर देनी चाहिए।

तिल की विभिन्न किस्म –

टी.सी 25

यह किस्म 90–100 दिन में पक जाती है। हर पौधे पर औसतन 4–6 शाखाये होती हैं। इसके पौधे की सभी फलिया एक साथ पकती हैं जिससे फसल काटने पर बीज बिखरने का भय नहीं रहता है। इसकी औसत उपज 425 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर है। बीज का रंग सफेद, तेल की मात्रा 49 प्रतिशत व प्रोटीन 27 प्रतिशत तक होती है।

प्रताप (सी 50) –

यह एक शाखा रहित पौधे वाली किस्म है जो 110 से 115 दिन में पक जाती है भारी मिट्टी वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त इस किस्म की औसत उपज 450 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर होती है इसके बीजों का रंग सफेद एवं तेल की मात्रा 45 प्रतिशत होती है।

आर.टी.-46

सफेद बीजों वाली यह किस्म 75 से 80 दिन में पक जाती है। इसकी औसत उपज 600 से 800 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर तथा तेल की मात्रा 49 प्रतिशत होती है।

आर. टी. 125 –

75–80 दिन में पकने वाली व सफेद दानों वाली यह किस्म 9–10 विंटल प्रति हैक्टर उपज देती है। इसके दानों में तेल की मात्रा 49.8 प्रतिशत होती है। यह किस्म भारी मिट्टी वाले क्षेत्रों के लिए भी उपयुक्त है।

आर.टी. 103 –

सफेद बीजों वाली सिंचित व असिंचित दोनों अवस्थाओं के लिए उपयुक्त इस विधि की पकाव अवधि 82 दिन व तेल की मात्रा 48.6 प्रतिशत होती है। यह शाखा युक्त किस्म है। इसकी औसत उपज असिंचित अवस्था में 6–8 विंटल प्रति हैक्टर होती है।

आर.टी. 127 –

यह एक सूखा रोधी किस्म है जो 75–85 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इसकी औसत उपज 600–900 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर है। इसके बीज सफेद, चमकदार एवं सुडौल होते हैं। तिल में तेल की मात्रा 49.5 प्रतिशत होती है। इस किस्म की निर्यात गुणवत्ता उच्च है।

प्रगति (एम.टी. 175) –

यह किस्म 88 दिन में पककर तैयार हो जाती है। दानों में तेल की मात्रा प्रतिशत होती है तथा उपज 5–6 विंटल प्रति हैक्टर होती है। इसका बीज सफेद होता है।

बीज दर –

शाखा रहित किस्में जैसे प्रताप के लिए 4 से 5 कि.ग्रा. बीज तथा शाखायुक्त किस्म टी. सी. 25 की बुवाई के लिए 2 से 2.5 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टर पर्याप्त होता है।

बीजोपचार –

बुवाई के पूर्व बीज को 3 ग्राम थायरम या कैप्टान प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपज करें। जीवाणु अंगमारी रोग से बचाव हेतु 2 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइकिलन का 10 लीटर पानी में घोल बनाकर बीजोपचार करें। तिल में एजोटोबेक्टर एवं पी.एस.बी. जीवाणु खाद का उपयोग करने से नाइट्रोजन, फॉस्फोरस उर्वरकों की मात्रा में 25 प्रतिशत तक कटौती की जा सकती है।

बुबाई का समय एवं विधि –

तिल की बुबाई 15 जून से 15 जुलाई तक कर देनी चाहिए। देर से बुनाई करने पर उपज कम होती है। तिल की बुबाई इल के पीछे कतारों में 30 सेमी की दूरी पर 3–4 सेमी. गहराई पर बुबाई करनी चाहिए। कतारों में पौधे से पौधे की दूरी 10–15 सेनी रखते हैं। डीआई टिकी विधि से भी की जाती है।

उर्वरक –

तिल के लिए निश्चित वर्षावाले क्षेत्र में 40 किया. नाइट्रोजन व 25 किग्रा फॉस्फोरस प्रति हैक्टर की दर से देवे। नाईट्रोजन की आधी मात्रा एवं फॉस्फोरस की पूरी मात्रा बुबाई के समय समय इस प्रकार देवे कि उर्वरक बीज से 4–5 से.मी. नीचे रहे। नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा बुबाई के 1–5 सप्ताह बाद हल्की वर्षा के समय खेत में भुरक देखें। बुबाई से पूर्व 250 कि.ग्रा० जिस्सम प्रति हैक्टर देना लाभदायक रहता है।

सिंचाई –

तिल में सामान्यत सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। सिंचित क्षेत्र में वर्षा नहीं होने पर आवश्यकतानुसार सिंचाई की जा सकती है। फूल आते समय व फली में दाना पड़ते समय खेत में की कमी होने पर सिंचाई का साधन उपलब्ध हो तो सिंचाई करनी चाहिए।

अन्तराकृषि –

तिल खरीफ की फसल होने से इसमें खरपतवार अधिक उगते हैं। अधिक उपज तिल में एक से दो बार निराई—गुडाई करनी चाहिए। पहली निराई—गुडाई बुबाई के 20 दिन बाद दुरारी 30 दिन की अवस्था पर करनी चाहिए। रासायनिक खरपतवार नियन्त्रण के लिए बुबाई से पूर्व हेक्टर 75 किग्रा पलूक्लोरेलिन को 1000 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

पादप संरक्षण

पत्ती एवं फली छेदक कीट –

इन कीटों के प्रकोप से बचाने के लिए फसल पर क्यूनालफॉस 25 ई.सी. एक लीटर या कार्बरिल 50 प्रतिशत चूर्ण 2 से 3 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर फूल व फली आते समय छिड़ककर एवं आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तर पर छिड़काव दोहरायें।

झुलसा एवं अंगमारी (Blight) –

इस रोग की शुरुआत पत्तियों पर छोटे भूरे रंग के शुष्क धब्बों से होते हैं, जो बड़े होकर पत्तियों को झुलसा देते हैं। तने पर इसका प्रभाव भूरी धारियों के रूप में दिखाई देता है दिखाई देता है। रोग दिखाई देते ही डेढ़ किग्रा मैन्कोजेब या 25 कि.ग्रा. कैप्टान, प्रति हैक्टर 15 दिन के अन्तर से छिड़कें।

छाछ्या (Powdery mildew) –

इस रोग में पत्तियों पर सफेद पाउडर जमा हो जाता है। अधिक प्रकोप होने पर पत्तियों पीली पड़ सूखकर झड़ने लगती है। लक्षण दिखाई देते ही 20 कि.ग्रा. गंधक चूर्ण प्रति हैक्टर भुरके अथवा 200 ग्राम कार्बण्डाजिम प्रति हैक्टर छिड़के। छिड़काव/भुरकाव 15 दिन के अन्दर से दोहरायें।

पती विषाणु रोग –

यह बीमारी विषाणु द्वारा होती है। फूल आते समय रोग के लक्षण प्रकट होते हैं। रोग कीटों द्वारा फैलता है अतः कीट नियंत्रण हेतु क्यूनालफॉस 25 ई.सी. एक लीटर प्रति हैक्टर की दर से दो बार बुवाई के 25 दिन बाद एवं 40 दिन बाद छिड़काव करना लाभप्रद रहता है।

कटाई मंडाई –

तिल की कटाई समय पर करना अतिआवश्यक है अन्यथा बीज बिखरने का भय है। पकने पर ज्योही पौधे पीले पड़ जाये, उन्हें काट कर छोटे-छोटे बंडलों में बांध कर सुखाना चाहिए। खलिहान में पौधे करीब एक सप्ताह तक पूर्ण रूप से सूखे जाने के बाद सूखे पौधों को फर्श पर रखकर डंडे से पीटकर मंडाई करें। मंडाई के बाद हवा में उड़ाकर दानों को साफ कर लिया जाता

उपज –

तिल के दाने की उपज 5 से 6 किंवटल प्रति हैक्टर होती है।

भण्डारण –

बीजों का अच्छी तरह साफ करके सुखाकर भण्डारण किया जाना चाहिए। भण्डारण के समय बीज में नमी की मात्रा 8 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए।

तिल से तैयार किये जाने वाले उत्पाद – तिल के मूल्य संवर्धन हेतु तिल से निर्मित अन्य उत्पाद जैसे – तेल, खल, गजक एवं रेवड़ी तैयार कर बेचने से अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है।

गजक –

तिल के दाने से सर्दियों के मौसम में स्वादिष्ट व्यंजन तिल के दानों में गुड व शक्कर मिलाकर तैयार किये जाने वाला उत्पाद है जिसकों सर्दियों के मौसम में शरीर के इम्यूनिटी सिस्टम बढ़ाने के लिये व पाचन के लिये बड़े चाव से लोगों द्वारा खाया जाता है।

तेल –

तिल के दानों से अन्य तिलहनी फसलों की तरह तेल निकाल कर विभिन्न उत्पाद बनाने के लिये काम में लिया जाता है। तिल के तेल को गरीबों का घी भी कहां जाता है। तिल के दानों में करीब 45–54 प्रतिशत मात्रा पायी जाती है।

खल –

तिल के दानों से तेल निकलने के बाद में उपउत्पाद के रूप में खल प्राप्त होती है जिसको जानवरों को खिलाने के काम में व फसलों में उर्वरक के रूप में उपयोग में लिया जाता है जो कि काफी पौष्टिक होती है, इसमें नाईट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश व अन्य न्यूट्रेंस की मात्रा पायी जाती है।

औषधीय महत्व –

तिल के दानों को आदिकाल से हिन्दू धर्म में हवन सामग्री व अन्य धार्मिक कार्यों में उपयोग में लिया जाता है। तिल के दानों व तेल से मानव व जानवरों के लिये विभिन्न प्रकार की औषधियाँ तैयार की जाती हैं।

पंच गौरव एक जिला एक उपज के तहत तिल की उपज एवं क्षेत्रफल बढ़ाने हेतु करवाये जाने वाले संभावित कार्यों के प्रस्ताव निम्नानुसार है –

1. तिल की फसल का क्षेत्रफल एवं उपज बढ़ाने हेतु राज्य सरकार द्वारा निःशुल्क हाईब्रिड किस्म के मिनिकिट् किसानों को उपलब्ध करवाना।

2. तिल की फसल का प्रति हैक्टर उत्पादन बढ़ाने हेतु कृषकों के खेतों में पी.ओ.पी. के अनुसार निःशुल्क प्रदर्शन का आयोजन करवाना।
3. तिल की जल भराव सहनशील संकर किस्मों के विकास हेतु अनुसंधान करवाया जावे।
4. तिल की फसल में जड़ एवं तना गलन रोग से बचाव हेतु बीज उपचार के लिये कृषकों को बीज उपचार कीट अनुदान पर उपलब्ध करवाई जावे तथा साथ ही रोग प्रतिरोधक किस्म का विकास करना।

क्रं. सं.	कार्य का नाम	संख्या/यूनिट/क्षेत्रफल	अनुमानित लागत (लाखों में)
1	उन्नत किस्में के मिनिकिट्स	12000 मिनिकिट्स	10.50 लाख रुपये
2	तिल प्रदर्शन	1000 हैक्टर	30 लाख रुपये
3	तेल मील	10 ऑयल स्पेलर यूनिट	25 लाख रु0 प्रति यूनिट
4	गजक/रेवडी	5 प्रोसेसिंग यूनिट	10 लाख रु0 प्रति प्रोसेसिंग यूनिट

- कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय— 75.50 लाख रुपये
- पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रुपयों में)— 75.50 लाख रुपये

उत्पादन में चुनौतियाँ व समाधान —

तिल की फसल में जड़ व तना गलन तथा झुलसा रोग तथा जल भराव वाले क्षेत्रों में तिल का उत्पादन एक प्रमुख चुनौतियाँ है, जिसके लिये बुवाई से पूर्व बीजों का बीजोपचार करके बुवाई करनी चाहिए जिससे की तिल में लगने वाले रोगों से बचाव हो सके तथा काली मिट्टी एवं जल भराव वाले क्षेत्रों में तिल की बुवाई नहीं करें। यदि जल का भराव होता है तो जल निकासी की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए।

एक जिला एक उत्पादः—सैण्ड स्टोन के उत्पाद

➤ उत्पाद चयन

करौली जिले के लिए जिला कलक्टर की अध्यक्षता में आयोजित जिला स्तरीय निर्यात प्रोत्साहन समिति (डीएलईपीसी) की बैठक दिनांक 27.10.2020 को “एक जिला एक उत्पाद” के अन्तर्गत चयनित **सैण्ड स्टोन** का जिले में सैण्ड स्टोन आधारित स्टोन गैंगसा इकाइयों एवं सैण्ड स्टोन की प्रचुर उपलब्धता के कारण **सैण्ड स्टोन आर्टिकल्स** का अनुमोदन किया गया है।

➤ जिले से चयनित ODOP उत्पाद की विशेषताएं

एक जिला एक उत्पाद में चयनित सैण्ड स्टोन प्राकृतिक रूप से परतों के उपर जमा होने से कई लाखों वर्षों में निर्मित हुआ है, यह छिद्रदार (POROUS) प्राकृतिक उत्पाद है इसके कण दूर-दूर होने के कारण **Slip Resistant, Heat Resistant, UV Resistant** है। यह **Naturally Strengthfull, Fire & HeatProof** है, इसलिए भवन निर्माण में काम आता है। यह एक छिद्रदार (POROUS) होने के कारण नक्काशी (Stone Carving) इस पर बहुत अधिक मात्रा में होता है। विश्व प्रसिद्ध मण्डियों और प्राचीन इमारतों में इसका उपयोग होता आया है। प्राचीन समय में लाल किला, आगरा का किला, फतेहपुर सिकरी के भवनों में करौली धौलपुर **रेड सैण्ड स्टोन** का उपयोग हुआ है और वर्तमान में राम मन्दिर, अक्षरधाम मन्दिरों, सेन्ट्रलविरस्टा इत्यादि प्रोजेक्ट में काम में लिया जा रहा है। यह विभिन्न रंगों में उपलब्ध है जैसे लाल, सफेद, पिंक, चॉकलेट इत्यादि। लेकिन रेड सैण्ड स्टोन प्रमुख रूप से उपलब्ध एवं प्रसिद्ध है।

जिले में ओडीओपी उत्पाद इकाइयों की संख्या –

जिले में सैण्ड स्टोन आर्टिकल्स एवं गैंगसा (स्टोन कटिंग) इकाइयों की संख्या लगभग 45–50 है जिनमें हिण्डौन औद्योगिक क्षेत्र में 20–22 इकाइयां, करौली औद्योगिक क्षेत्र में 10–12 इकाइयां तथा मासलपुर औद्योगिक क्षेत्र में 5–7 एवं जिले में अन्य कस्बों में लगभग 10–12 इकाइयां कार्यरत हैं।

➤ ओडीओपी पहले

वर्ष 2022 में 5 देशों यथा मोरक्कों, बुल्गारिया, नामिबिया, आर्मेनिया एवं दक्षिणी सूडान के राजदूतों का शिष्टमण्डल को ओडीओपी उत्पाद का एक्सपोजर विजिट कराया गया। मिशन निर्यातिक बनों कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष 2022 में विदेश व्यापार महानिदेशालय के माध्यम से 24 सैण्ड स्टोन इकाइयों को आयात—निर्यात कोड जारी कराया गया ताकि वे अपना कन्साइनमेण्ट विदेशों में भेज सकें।

सैण्ड स्टोन उत्पादों से जुड़ी एक इकाई द्वारा हैदराबाद, दिल्ली एवं मुम्बई में कलात्मक दरवाजे लगाये गये हैं जिनके प्रतीक चिह्नों तथा स्टोन कार्विंग उत्पाद मूर्तियों, जाली, जंगलो, फूल पत्ती, खरगोश, कछुआ, मगरमच्छ, मोर, ऊट इत्यादि कलात्मक उत्पादों की सराहना की गयी है।

➤ भविष्य की राहें—

करौली जिला सेण्ड स्टोन खनिज की प्रचुरता रखता है। यहां का रेड स्टोन देश ही नहीं विदेशों में भी आपूर्ति होता है। करौली-धौलपुर के रेड स्टोन से सिकन्दरा, जयपुर, अलवर आदि स्थानों पर कलात्मक स्टोन कार्विंग बनायी जाती है। यदि स्थानीय स्तर पर सेण्ड स्टोन की डिजाईनिंग तथा कटिंग कर दी जाती है तो यह स्थानीय लोगों की आय, उत्पादन, रोजगार, निर्यात आदि में बृद्धि कर सकता है।

करौली जिले के सेण्ड स्टोन आर्टिकल्स की ब्राइंग एवं मार्केटिंग के साथ-साथ कुशल दस्तकारों को उत्पाद विविधीकरण का प्रशिक्षण देना आवश्यक है ताकि वे अपने उत्पादों को नवीन आयाम दे सकें।

राज्य सरकार का महत्वाकांक्षी पंच गौरव कार्यक्रम तथा राजस्थान एक जिला एक उत्पाद नीति-2024 सेण्ड स्टोन आर्टिकल्स के बहुआयामी विकास में नयी इवारत गढ़ सकता है।

कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य / गतिविधियाँ—

हार्ड इन्टरवेन्सन

- SPV हेतु भू-आवंटन लागत—01 करोड़ रुपये
- SPV निर्माण लागत—01 करोड़ रुपये
- SPV निर्माण के पश्चात मशीनरी एवं उपकरण लागत—0.80 करोड़ रुपये
- SPV हेतु संचालन लागत— 0.20 करोड़ रुपये

सॉफ्ट इन्टरवेन्सन

- स्किल अपग्रेडेशन— 01 करोड़ रुपये
- एक्सपोजन विजिट — 0.20 करोड़ रुपये
- मार्केटिंग असिस्टेन्स— 0.70 करोड़ रुपये
- विविध लागत— 0.10 करोड़ रुपये
- कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय—500 लाख रुपये
- पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रुपये में)—500 लाख रुपये

एक जिला एक खेलः— क्रिकेट



क्रिकेट—करौली जिले में बजट घोषणा 2024–25 के अन्तर्गत एक जिला एक खेल योजनान्तर्गत जिला मुख्यालय पर क्रिकेट का चयन किया गया। इस खेल के चयन हेतु मुख्य उद्देश्य जिले में उक्त खेल को नर्सरी स्तर से ब्लॉक जिला राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खिलाड़ियों को उत्तम गुणवत्ता में नई तकनीक का प्रशिक्षण प्रदान करते हुए व जिले की एक नई पहचान कायम की जानी है।



जिला स्तर पर क्रिकेट खेल संघ का पंजीयन— करौली जिला मुख्यालय पर क्रिकेट खेल संघ का गठन किया हुआ है जिसमें चुनाव कराये जाकर संघ का गठन किया जाता है जो खेल अधिनियम 2005 के अन्तर्गत रजिस्ट्रार सहकारी समिति करौली से पंजीकृत है। इनके द्वारा उक्त खेल के विकास व उन्नयन हेतु वर्षवार प्रचार प्रसार करते हुए प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।



जिला स्तर पर क्रिकेट प्रतियोगिताओं का आयोजन— करौली जिला मुख्यालय पर क्रिकेट खेल हेतु जिला संघ द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है जिसमें सब जूनियर खेल प्रतियोगिता, अण्डर-14 खेल प्रतियोगिता, जूनियर जिला क्रिकेट खेल प्रतियोगिता, सीनियर जिला क्रिकेट खेल प्रतियोगिता व यूथ जिला क्रिकेट प्रतियोगिताओं का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है जिसमें जिले के विभिन्न ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के प्रतिभावान खिलाड़ी इन प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं। इन प्रतियोगिताओं में सब जूनियर 17 वर्ष आयु तक, जूनियर प्रतियोगिताओं में 19 वर्ष आयु तक व सीनियर/यूथ प्रतियोगिताओं में 19 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के खिलाड़ी भाग लेते हैं। उक्त प्रतियोगितायें पुरुष व महिला वर्ग दोनों में आयोजित की जाती हैं।



राज्य स्तर पर क्रिकेट प्रतियोगिताओं का आयोजन— करौली जिले में जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं का महिला व पुरुष में विभिन्न कैटेगरी के अन्दर आयोजन पश्चात खिलाड़ियों का चयन राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में किया जाता है जिसमें राज्य स्तर पर जिले की समस्त जिला स्तरीय विभिन्न वर्गों की टीमें चयनित की जाकर जिला खेल अधिकारी करौली के प्रमाणिकरण के पश्चात भाग लेती है पिछले कई वर्षों से जिले की टीमों ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में भाग लेकर जिले का नाम रोशन किया है। इस खेल का जिले के अन्दर बहुत ही अच्छा प्रचलन है।



राष्ट्रीय स्तर पर क्रिकेट प्रतियोगिताओं का आयोजन— करौली जिले की टीमों ने राज्य स्तर पर पिछले कई वर्षों में अच्छा प्रदर्शन किया है जिस कारण इस खेल के कई खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय स्तर पर भाग लेकर जिले का नाम रोशन किया है कई राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में जिले के सीनियर व जूनियर तथा सब जूनियर खिलाड़ियों ने पदक भी प्राप्त किये हैं।

फेडरेशन कप क्रिकेट प्रतियोगिताओं का आयोजन— करौली जिले के कई प्रतिभावान यूथ खिलाड़ियों ने पिछले कई वर्षों में फेडरेशन कप क्रिकेट प्रतियोगिताओं में इण्डो-नेपाल में आयोजन में भाग लिया है जिसमें कई खिलाड़ियों ने फेडरेशन कप में पदक प्राप्त किये हैं जिससे करौली जिले में इस खेल के द्वारा जिले का नाम रोशन किया है।

क्रिकेट खेल से रोजगार के अवसर— करौली जिले के कई पदक विजेता खिलाड़ियों को केन्द्र सरकार में डाक विभाग, कर्स्टम इत्यादि में रोजगार मिला है इसके अतिरिक्त राज्य सरकार द्वारा सन् 2013 से पूर्व अध्यापक व शारीरिक शिक्षकों के पद पर खेल कोटे से नियुक्तियां प्राप्त हुई हैं। करौली जिले में क्रिकेट खेल को नर्सरी के रूप में जाना जाता है। इस खेल को शहरों व ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांशतया खेला जाता है।

क्रिकेट खेल हेतु खेल मैदान— करौली जिले में जिला मुख्यालय पर राजीव गांधी खेल संकुल में उक्त खेल के आयोजन व प्रशिक्षण हेतु क्रिकेट खेल का मैदान बना हुआ है जिसमें चारों तरफ लोहे की जालियां, ग्रासिंग, वॉटर सप्लाई व पिंच निर्मित हैं। इस ग्राउण्ड पर फ्लड लाइटों की आवश्यकता है जिसके प्रस्ताव राज्य सरकार को प्रेषित किये जा चुके हैं। इसके अतिरिक्त माथुर स्टेडियम पर भी इस खेल आयोजन हेतु मैदान उपलब्ध है व राजीव गांधी खेल संकुल पर भी इस खेल के आयोजन हेतु मैदान तैयार कराने के लिये भूमि उपलब्ध है।



क्रिकेट खेल हेतु खेल अकादमी की स्थापना— करौली जिला मुख्यालय पर क्रिकेट खेल प्रचलित खेलों में से एक है जिसका चयन एक जिला एक खेल हेतु किया गया है। इस खेल की अकादमी हेतु सब जूनियर व जूनियर खिलाड़ियों की एक अकादमी संचालित करने की मांग रखी गई है जिसमें लगभग 25–30 खिलाड़ी आवासित हो सके जिनको निःशुल्क आवास, भोजन, शिक्षा व प्रशिक्षण की व्यवस्था सुनिश्चित होवे साथ ही अकादमी भवन का निर्माण हो जिसमें खिलाड़ियों को आवास की सुविधा उपलब्ध रहेगी इस हेतु प्रस्ताव राज्य सरकार को भेजे गये हैं।

क्रिकेट खेल हेतु प्रशिक्षक— करौली जिला मुख्यालय पर खिलाड़ियों को प्रशिक्षण देने के हेतु राष्ट्रीय स्तर के पदक विजेता खिलाड़ी उपलब्ध हैं और कई खिलाड़ी

फेडरेशन कप व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इण्डो-नेपाल प्रतियोगिता के पदक विजेता खिलाड़ी हैं जिनके द्वारा इस खेल में प्रशिक्षण नियमित रूप से दिया जाता है।

क्रिकेट खेल हेतु खिलाड़ियों को यात्रा भत्ता – करौली जिले के विभिन्न केटैगिरी व आयु वर्ग में राज्य स्तर व राष्ट्रीय स्तर पर भाग लेने वाले खिलाड़ियों को नियमानुसार राज्य सरकार द्वारा यात्रा व दैनिक भत्ते का खिलाड़ियों के खाते में भुगतान किया जाता है। उक्त खेल संघ राज्य सरकार व भारत सरकार से पंजीकृत है। खिलाड़ियों को राज्य पर भाग लेने हेतु 600/- रुपये प्रतिदिन भोजन भत्ता व 1200/-रुपये एकमुश्त आनुसांगिक व्यय के रूप में भुगतान किया जाता है। इसके अतिरिक्त खिलाड़ियों घर से प्रतियोगिता स्थल तक आने जाने का बस व ट्रेन का किराये का भी नियमानुसार भुगतान किया जाता है।

कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियाँ—

1. खेल मैदानः—

खेल मैदान के लिये हाईमास्क फ्लड लाईटों की आवश्यकता है जिस हेतु लगभग 100 लाख अनुमानित बजट की आवश्यकता है।

2. खेल उपकरणः— खिलाड़ियों को प्रशिक्षण हेतु वार्षिक 10 लाख रुपये अनुमानित खेल उपकरण क्रय हेतु बजट की आवश्यकता है।

3. खेल प्रशिक्षकः— एक जिला एक खेल क्रिकेट के अन्तर्गत प्रशिक्षण कार्य हेतु एक स्थाई प्रशिक्षक की आवश्यकता है।

4. खेल अकादमी हेतु भवनः— उपरोक्त खेल की 30 वेडेड अकादमी आवास हेतु भवन की आवश्यकता होगी जिस हेतु अनुमानित व्यय 200 लाख रुपये बजट की आवश्यकता है।

5. खेल अकादमी संचालनः— उपरोक्त खेल की 30 खिलाड़ियों की अकादमी का संचालन किया जाना उचित होगा जिस हेतु निःशुल्क भोजन, आवास, शिक्षा व यातायात आदि व्यवस्थाओं पर वार्षिक 25 लाख रुपये अनुमानित बजट की आवश्यकता है।

6. विविध व्ययः— 2 लाख रुपये वार्षिक

कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्ययः— 337 लाख रुपये

पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रुपये में)–333.40 लाख रुपये

एक जिला एक वनस्पति प्रजाति अंतर्गत बरगद का पौधा



एक जिला एक वनस्पति प्रजाति अंतर्गत बरगद का पौधा पौधशालाओं में तैयार बरगद के पौधे



पौधशालाओं में तैयार बरगद के पौधे



- राजस्थान सरकार की बजट घोषणा 2024—25 के Mission " हरियालो राजस्थान " के अन्तर्गत एक जिला—एक वृक्ष कार्यक्रम अन्तर्गत करौली जिले में बरगद (*Ficus benghalensis*) का चयन किया गया है।
- बरगद या वटवृक्ष अपनी विशालता और दीर्घ जीवन पवित्रता व औषधीय गुणों के लिए जाना जाता है जो एक सदाबहार वृक्ष है।
- इस वनमण्डल अधीन इस वित्तीय वर्ष में विभिन्न—विभिन्न नर्सरियों में लगभग 70—80 हजार बरगद के पौधे तैयार किये जा रहे हैं।
- राजस्थान सरकार की महत्वपूर्ण योजना TOFR(Tree out side Forest) के अन्तर्गत विभिन्न नर्सरियों में तैयार किये जा रहे बरगद के पौधों का वितरण किया जायेगा।

परिचयः— बरगद अपनी विशालता और दीर्घ जीवन के लिए जाना जाता है। भारत में इसे पवित्र औद देवतुल्य माना जाता है। आमतौर पर यह धार्मिक सिलों तथा मंदिरों के आसपास मिल जाता है। बरगद का वृक्ष एक सदाबहार विशाल वृक्ष है इसकी उंचाई 20 से 25 मीटर तक हो सकती है। इसके फल मार्च से मई के महीने में पक जाते हैं। इसके बीज सूक्ष्य और असंख्य होने के कारण एक किलोग्राम में लगभग 20 लाख तक बीज होते हैं अंकुरण क्षमता 10 प्रतिशत होती है व 15 दिवस में बीज उगते हैं।

- **क्षेत्र एवं विस्तार एवं पारिस्थितिकीः—** बरगद एशिया महादीप का मूल निवासी है तथा उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में पाया जाता है राजस्थान में पूर्वी तथा दक्षिणी क्षेत्र में बरगद पाये जाते हैं बरगद के बीज कैल्शियम पसंद करते हैं तथा इसे चूने/सीमेन्ट से निर्मित दीवारों में उगते हुए देखा जा सकता है। बरगद रेतीली दोमट मिट्टी में बेहतर पनपते हैं। यह सूखा प्रतिरोधी है और 4–6 शुष्क महीनों का सामना कर सकता है।
- **महत्व एवं उपयोगः—** बरगद अकाल के स्यम भी जीवित रहता है एवं अपने औषधीय गुणों से महिला, पुरुष बुजुर्ग और बच्चों सभी के लिए फायदेमंद है आयुर्वेद में इसे कान के रोग बालों के रोग, त्वचा रोग, खांसी-जुकाम, दस्त उलटी, मधूमेह इत्यादि में लाभदायक है। पर्यावरण संतुलन व धार्मिक महत्व के कारण इसकी पूजा की जाती है।

कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य / गतिविधियाँ—

क्रसं	कार्य का नाम	अनुमानित लागत
1	5000 पौधे तैयार करने हेतु आवश्यक बजट	1 लाख रुपये
2	तैयार पौधों का परिवहन	0.2 लाख रुपये
3	गड्डे खुदाई का कार्य	0.6 लाख रुपये
4	पौधे लगाये जाने व निराई गुडाई का कार्य	1 लाख रुपये
5	पौधे हेतु ट्री गार्ड	15 लाख रुपये
6	पौधे की सुरक्षा हेतु श्रमिक पाँच साल के लिये 10 श्रमिक	4.04 लाख रुपये
7	पौधे को पानी हेतु टेंकर पाँच साल के लिये	7.2 लाख रुपये

कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय— 29.04 लाख रुपये
पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रुपये में)—23.04 लाख रुपये

एक जिला एक पर्यटन स्थल कैलादेवी मन्दिर

श्री कैलादेवी जी मंदिर का संक्षिप्त इतिहास एवं परिचयात्मक विवरण।

उत्तर भारत के राजस्थान प्रान्त में स्थित करौली जिले के अन्तर्गत श्री कैलादेवी प्रसिद्ध आस्थाधाम है, जहां चैत्र कृष्ण द्वादशी से चैत्र शुक्ल द्वादशी तक 17 दिवसीय भाद्रपद शुक्ल पक्ष पंचमी से आश्विन कृष्ण पक्ष द्वितीय तक 12 दिवसीय तथा आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से आश्विन शुक्ल पक्ष एकादशी तक 10 दिवसीय मेला विशाल मेलों का प्रतिवर्ष आयोजन होता है। मेले अलग—अलग राज्यों सम्पूर्ण राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, दिल्ली, गुजरात हरियाणा, पंजाब इत्यादि के श्रद्धालु आते हैं।

अधिकांश लोग शीतलाष्टमी का पूजन करके अपने घर से चलकर कैलादेवी पहुंचते हैं। जन श्रुतियों के अनुसार विक्रम सम्वत् 1489 तदनानुसार सन् 1432 में चम्बल पार गागरौन के खीचीं के खीचीराजा मुकुंद दास द्वारा माताजी का मठ निर्मित करवाया गया था। विक्रम सम्वत् 1506 (सन् 1449) में महाराजा चन्द्रसेन यदुकुल नरेश ने इस क्षेत्र को जिसमें अब श्री कैलादेवी जी का मठ है, अपने कब्जे में कर लिया था। उस समय युद्धवंश की राजधानी देवगिरी(उटगिरी) में थी, और सम्राट् अकबर का दिल्ली में शासन था। सम्राट् अकबर ने चारों ओर विजय प्राप्त कर ली। परन्तु दौलताबाद पर विजय नहीं हो रही थी। तब काशी के ज्योतिषी के कहने पर सम्राट् अकबर स्वयं उटगिरी आये एवं महाराजा चन्द्रसेन जी को दौलताबाद पर मदद करने को कहा। महाराजा ने बादशाह से कहा की मैं तो अब वृद्ध हूँ और आपके साथ अपने पौत्र गोपालदास को भेज देता हूँ।

क्षत्रीय कुल की रीति के अनुसार महाराजा चन्द्रसैन जी ने दौलताबाद विजय हेतु श्री कैलादेवीजी की आराधना की, मठ पर आकर पूजन किया एवं विजय का वरदान प्राप्त कर गोपालदास जी ने प्रस्थान किया। गोपालदास जी ने कुछ शाही सेना एवं युद्धवंशी क्षत्रीयों की सेना लेकर दौलताबाद पर चढ़ाई की और भी भीषण युद्ध कर विजय प्राप्त की। जब गोपालदास जी लोटकर उटगिरी आये तो बड़े समारोह से कैलादेवी जी की यात्रा की, पूजन किया दान दक्षिणा बांटी गयी। तभी से कैलादेवी जी यदुकुल नरेशों की अधिष्ठात्री राज्यदेवी हैं। प्रथम चन्द्रसैन जी महाराज से पुजित मानी गयी है।

वंशानुक्रम में विक्रम संवत् 1780 (सन् 1723) वैशाख कृष्ण द्वादशी गुरुवार को तत्कालीन करौली महाराजा श्री गोपालसिंह जी ने माताजी के मंदिर की नीव रखीं। और सवत् 1787 (सन् 1730) वैशाख सूदी तृतीया को देवल का कार्य पूर्ण हुआ। महाराजा गोपाल सिंह जी जिन्होने जयपुर से मदनमोहन जी की मूर्ती लाकर करौली में महलों के निकट मंदिर बनाकर मूर्ती स्थापना करवायी, उन्हीं महाराजा ने कैलादेवी जी की मूर्ती जो पहले से मठ में स्थापित थी, उसका अभिषेक करवा कर मंदिर में स्थापना करवायी। उसी समय आस पास के गांव के पंच पटेलों, ग्रामीण लोगों ने महाराजा से प्रार्थना की, कि यहां से 7–8 कि.मी. दूरी पर एक बासीखेड़ा ग्राम है। वहां गांगरोन के खीची राजा के समय से श्री चामुण्डा देवी जी का प्राचीन कालिन मंदिर है जिसमें सम्वत् 1207 (सन् 1150) का बीजक लगा है। अब वह गांव उजड़ हो गया है और मंदिर में मूर्ती विराजमान है। जिसकी सेवा पूजा नहीं होती है। यदि महाराजा की आज्ञा हो तो चामुण्डा मां की मूर्ती भी कैलादेवी जी के साथ मंदिर में स्थापित करा

दी जावें तो सेवा पूजा भी नियमित होती रहेगी। महाराजा की स्वीकृति से चामुण्डा माता की मूर्ती को विधिवत् स्थापना कर दी गई। तभी से जो भी राजा करौली की गद्दी पर विराजे वंश परम्परा के अनुसार माँ कैलादेवीजी एवं चामुण्डा देवी जी की आराधना यथा समय करते आ रहे हैं।



महाराजा प्रतापपाल जी द्वारा विक्रम सम्वत् 1903(सन् 1846) में करौली से कैलादेवी के रास्ते में एक पक्का कुओँ, एक बावडी, बाग का पक्का कोट बनवाया। यह सब यात्रीयों के विश्राम तथा जल के कष्ट निवारणार्थ बनवाये गये।

विक्रम सम्वत् 1910 (सन् 1853) में महाराजा मदन पाल जी द्वारा माताजी की विधिवत् सेवा हेतु गुसाई की नियुक्ति की गई एवं उनके रहने के लिए माताजी के भवन के निकट एक मठ का निर्माण करवाया जो मुख्य प्रवेश द्वार के पास स्थित है। तत्पश्चात् महाराजा जयसिंह पाल जी द्वारा विक्रम सम्वत् 1926 सन् (1869) में देवी जी के स्थल में रंगभीमी का बाग एवं कुओँ बनवाया माताजी के मंदिर पर गुमंद बनवाया एवं स्वर्ण कलश चढ़ाया।

विक्रम सम्वत् 1932 (सन् 1875) में करौली माहाराज श्री अर्जुनपाल जी द्वारा माताजी के मंदिर में दुर्गा सप्तसती का दैनीक पाठ पठन करने के लिए दो दुर्गापाठी पण्डितों की नियुक्ति की गई जो व्यवस्था यथावत् वर्तमान में चालू है।

इनके पश्चात् विक्रम सम्वत् 1943(सन् 1886) में तत्कालीन महाराज श्री भैवरपाल जी ने गद्दी नशीन होने के पश्चात् यात्रीयों की सुविधार्थ करौली से माताजी के भवन तक तक पक्का मार्ग पूर्ण करवाया। उन्होने कालीसर की घाटी, देवी जी की परिक्रमा तथा दुकाने बनवाई और भवन की व्यवस्था व यात्रीयों की रक्षार्थ रिसाला भी नियुक्त किया। महाराजाधिराज ने कैलादेवी में पानी की असुविधा दूर करने के लिए एक विशाल कुओं का निर्माण करवाया। जिसका नाम दुर्गा सागर रखवाया। तदन्तर तहसील व थाने के कर्मचारीयों के हेतु आवास बनवाये।

करौली से कैलादेवी तक एक—एक मील पर चौकिया बनवायी। घुडसवार तथ पैदल गश्ती गार्ड चैत्र मास की यात्रा में रहते थें। जगह—जगह प्याउ तथा विश्राम का प्रबंध करवाया। अपने भवन का जीर्णोद्धार कर जयपुर से चित्रकार बुलबाकर चित्रकारी करवायी जो आज भी जीवन्त है। माताजी के गुम्बज पर स्वर्ण कलश चढ़ाया तथा एक चादी का स्तम्भ भी बनवाया जिस पर जिस पर माताजी की धजा फहरायी जाती है। आपने यात्रीयों की सुविधार्थ बड़ी धर्मशाला का निर्माण करवाया एवं प्राचीन कुण्ड का जीर्णोद्धार करवाया। जगह जगह प्याउ एवं विश्राम का प्रबंध करवाया।

विक्रम सम्वत् 1984(सन् 1927)में महाराजा भोमपाल जी ने अपूर्ण कार्यों को पूर्ण करवाया पक्की दुकाने तथा व्यवस्थित बाजार बनवाया। कैलादेवी में पावर हाउस बनवाकर बिजली का प्रकाश करवाया। भवन तथा बाजार में बिजली भी लगवाई। आपके पश्चात् विक्रम सम्वत् 2003(सन् 1946)में महाराजा गणेशपाल जी ने शक्ति निवास कोठी का निर्माण करवाया। देवी जी के मठ से सटे दो कमरे बनवाये तथा दोहरा मार्ग चढ़ने उत्तरने को बनवाया आपने माताजी के समस्त भवनों को संगमरमर के पत्थर से नवीन रूप दिया। इस प्रकार करौली राज्य में श्री कैलादेवी एवं श्री चामुण्डा देवी का पर्दापण हुआ।

वर्तमान में श्री कैलादेवी मंदिर का प्रबंध भारत सरकार के निर्देशानुसार एक ट्रस्ट द्वारा किया जा रहा है।

कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियाँ—

क्र.सं	कार्य का नाम	अनुमानित लागत
1	कालीसिल नदी पर घाटों का निर्माण	250 लाख
2	कालीसिल नदी के घाटों से मंदिर तक जाने हेतु पैदल/परिक्रमा का निर्माण	100 लाख
3	जन सुविधाओं का निर्माण	50 लाख
4	यात्री प्रतिक्षालय/विश्राम स्थल	100 लाख
5	सार्वजनिक उद्यान नये चकरी झूले का निर्माण	100 लाख
6	पार्किंग स्थल	100 लाख
7	गेस्ट हाउस निर्माण	250 लाख
8	बस स्टेप्ड का नवीनीकरण/पुनरुद्धार कार्य	100 लाख

कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्ययः— 1050 लाख रुपये और व कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रुपये में)—1050 लाख रुपये